Approved & enlisted by UGC (Sr. No. 185, J.No. 40741)

ISSN : 2277-4351
RNI Reg.UTTMUL 2012/53882

DP-10

वैदिक वाग् ज्योतिः
Vaidika Vāg Jyotiḥ

An International Refereed & Peer-Reviewed
Research Journal on Vedic Studies

Vol./ वर्ष - 5 July-December 2017 No./ अंक - 9

सम्पादक
प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
(NAAC द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त एवं यू.जी.सी. द्वारा पूर्णतः अनुदानित समविश्वविद्यालय)
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya
Haridwar-249 404 (Uttarakhand) India
http://www.gkv.ac.in

अनुक्रम

वैदिक वाक् *iii*

सम्पादकीय-वैदिक साहित्य के आलोक में महाभारत-प्रोक्त विश्वामित्र मेनका कथा का रहस्य *vii*

हिन्दी संभाग

1. मनुस्मृति और उसकी समाज व्यवस्था का मौलिक स्वरूप 01
   –डॉ. सुरेन्द्रकुमार
2. वैदिक ऋतु विभाग 24
   –आचार्य डॉ. धर्मवीर वैदिक, दिल्ली
3. अथर्ववेद का यथार्थस्वरूप 30
   –प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री
4. व्यक्तित्व-विकास में चारित्रिक गुणों का योगदान : शतपथ ब्राह्मण के सन्दर्भ में 69
   –डॉ. अपर्णा धीर
5. उपनिषदों में काव्यतत्व : छन्द योजना 79
   –डॉ. मोनिका मिश्रा
6. वैदिक वाङ्मय में वैश्विक समस्याओं का समाधान 84
   –डॉ. अनुभा जैन
7. विश्व शांति हेतु वैदिक जीवन-मूल्य 89
   –डॉ. कामना जैन
8. वर्तमान युग की चिकित्सा-पद्धति : योग एवं आयुर्वेद 96
   –डॉ. ईश्वर भारद्वाज, डॉ. ऊधम सिंह
9. यम-नियम एवं भावना चतुष्टय का सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में महत्त्व 104
   –डॉ. बबीता शर्मा, मीरा त्यागी
10. विश्व शान्ति में योग की भूमिका 113
    –डॉ. योगेश्वर दत्त

उपनिषदों में काव्यतत्व : छन्द-योजना

–डॉ. मोनिका मिश्रा
संस्कृत विभाग,
माता सुंदर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य है, वेद के अंतर्गत अनेक शाखाओं में प्रचलित चार वैदिक संहिताओं को परम्परागत रूप में माना जाता है और उन पर लिखे गए व्याख्यात्मक ग्रंथ ब्राह्मण नाम से माने जाते हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों के दो भाग हैं–

1. शुद्ध ब्राह्मण, जिनमें वेद मंत्रों की व्याख्या तथा कर्मकांड का प्रतिपादन है।
2. आरण्यक, जिनमें दार्शनिक तथा आध्यात्मिक चिंतन पाया जाता है।

इसी चिंतन का चरमोत्कर्ष आरण्यक ग्रंथों के उपनिषद् खंड में प्राप्त होता है। उपनिषद् शब्द की रचना उप+नि+षद्लृ (सद्) धातु से क्विप् प्रत्यय का योग करने से होती है, षद्लृ धातु के विशरण (विनाश), गति (ज्ञान) और अवसादन (शिथिलीकरण) तीन अर्थ हैं। उपनिषदों की संख्या काल क्रम से धीरे-धीरे बढ़ते हुए 200 से ऊपर आ पहुंची है। अक्षमालोपनिषद् से लेकर हेरम्बोपनिषद् तक लगभग 220 उपनिषद् प्राप्त हैं परन्तु प्राचीन वैदिक शाखाओं से निकटतम तथा साक्षात् संबंध रखने वाले 15-20 उपनिषद् ही उपलब्ध हैं।

उपनिषदों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों जीवनमूल्यों तथा नैतिक मानदंडों के दर्शन होते हैं, उपनिषद् मात्र दर्शन ग्रंथ नहीं अपितु उपनिषदों के मंत्र उत्कृष्ट काव्य के उदाहरण हैं, उनमें परवर्ती साहित्य में प्रतिसंपादित अलंकार, गुण, रीति, रस, ध्वनि आदि काव्यतत्वों के पूर्वरूप तथा उनके निदर्शन प्राप्त होते हैं। वैदिक साहित्य के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि महाभारत और रामायण से प्रारंभ होकर कालिदास, भारवि आदि के काल में जो काव्य परंपरा प्रवाहित होती रही उसका मूल वेदों और उपनिषदों में भी विद्यमान है, वैदिक ऋषि व्यास, वाल्मीकि के प्रेरक हैं उन्होंने काव्य की परंपरा चलाई, काव्यप्रस्थान का निर्माण किया, जिस पर परवर्ती कवि चले और उनके पीछे-पीछे कालिदास, भारवि, भवभूति आए। भरत